गुरु-शिष्य परंपरा योजना

चर्चा में क्यों?

बिहार सरकार के कला, संस्कृति एवं युवा विभाग ने **मुख्यमंत्री गुरु-शिष्य परंपरा योजना शुरू की है।**

मुख्य बिंदु

योजना के बारे में:

- **उद्देश्य:**
  - इसका उद्देश्य अनुभवी गुरु और युवा शिष्यों के बीच पारंपरिक गुरु-शिष्य प्रणाली के माध्यम से दुर्लभ **लोक कलाओं, संगीत परंपराओं और चित्रकला को पुनर्जीवित** करना है।
  - इस योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण पूरा करने के बाद एक **भव्य दीक्षांत समारोह** आयोजित किया जाएगा, जहाँ प्रशिक्षु अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे और उन्हें सम्मानित भी किया जाएगा।
- **वित्तपोषण:**
  - बिहार सरकार ने इस योजना के लिये **1.11 करोड़ रुपये** मंज़ूर किये हैं।
- **प्रारूप और वित्तीय सहायता:**
  - कुल **20 गुरु, 20 संगतकार और 160 शिष्यों** का चयन किया जाएगा।
  - वित्तीय सहायता सीधे उनके बैंक खातों में हस्तांतरित की जाएगी।
  - चयनित **गुरुओं को प्रतिमाह 15,000 रुपये, संगतकारों को 7,500 रुपये और शिष्यों को 3,000 रुपये मासिक छात्रवृत्ति** दी जाएगी।
  - चयनित कला रूपों में **दो वर्ष का प्रशिक्षण** प्रदान किया जाएगा।
  - प्रत्येक प्रतिभागी को प्रतिमाह कम-से-कम 12 दिन उपस्थित रहना होगा।
- **पात्रता:**
  - गुरु की आयु **50 वर्ष या उससे अधिक** होनी चाहिये।
  - गुरु बिहार का **स्थायी निवासी** होना चाहिये।
  - गुरु के पास संबंधित दुर्लभ या लुप्तप्राय कला रूप में **कम-से-कम 10 वर्ष का अनुभव** होना चाहिये।
  - गुरु के पास उचित आवास या प्रशिक्षण स्थल होना चाहिये तथा प्रशिक्षण केंद्र तक पहुँच भी होनी चाहिये।
- **महत्त्व:**
  - वरिष्ठ कलाकारों को **सम्मानजनक मासिक आय प्राप्त होगी,** जिससे उनकी आजीविका सुनिश्चित होगी।
  - पारंपरिक और लुप्तप्राय कला रूपों को पुनर्जीवित और संरक्षित किया जाएगा।
  - युवा प्रतिभाओं, विशेषकर ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों से, को अपने कौशल को संवर्द्धित करने का एक मंच मिलेगा।

h

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/guru-shishya-parampara-yojana